□□□□□□□ □□□□□

जनसत्ता 12 सितंबर, 2014: पछिले दनों मै मुंबई, पुणे और मध्यप्रदेश केमालवा अंचल केकुछ शहरों-कस्बों में था। इस बीच चूंकि गणेशोत्सव था, मेरा सामना सैकड़ों 'राजाओं' से हुआ। मुंबई की □कगणेश मूर्ति तो गणेशोत्सव केसमय 'लालबाग चा (का) राजा' केनाम से भारत भर में प्रसद्धि हो चली है। प्रसद्धि लोग और अधकिप्रसद्धि होने केलि। उस प्रसद्धि मूर्ति केदर्शनों केलि। जाते और जनता को अपना दर्शनलाभ करा आते है। जो प्रसद्धि और धनवान नहीं है, वे इन लालबाग केराजा से आशीर्वाद लेने केलि। घंटों लाइन में ख। रहते है। इसकेअलावा भी वहां हर गली-मोहल्ले केअपने राजा है, जैसे 'अंधेरी चा राजा', 'पार्ले चा राजा', 'गरिगाम चा महाराजा' आदि। जसि महाराष्ट्र में अ। सठ लाख गणेश मूर्तियां इस बार स्थापति हुई हों और उनमें बीस लाख आकार में ब□ी हों, वहां कतिनी ही गणेश मूर्तियां कहीं न कहीं की राजा जरूर बनी होंगी। मुंबई की देखादेखी सारे देश में गणेशजी को राजा बना दिया गया है। यानी उन्हें भगवान मानना काफी नहीं है, उनका गौरव किसी गली-मोहल्ले का तथाकथति राजा बनने पर ही ब□ता है।

हमारा लोकतंत्र अगर गहरी ज□ें जमा चुका हो तो भी उसका राजाओं और सामंतों से पीछा नहीं छूटा है, उन्होंने अब न□-न□ मुखौटे पहन लि। है। वैसे बहुत से समझदार 'राजा' जो भारत केआजाद होने केकारण □कदनि केलि। भी अपनी टुन्नी-मुन्नी-सी रियासत केराजा नहीं रहे- आज भी पसंद यही करते हैं कि उन्हें 'राजा' कहा और माना जा□□ इनमें से कुछ तो इतने हास्यास्पद हैं कि बाप केमरने पर बाकायदा धार्मकि और सामंती वधि-वधिानपूर्वक तथाकथति 'राजगद्दी' पर बैठते और अपना 'दरबार' लगाते हैं। हमारे तमाम मुख्यमंत्री-मंत्री-प्रधानमंत्री भी बेध□कदरबार लगाते है। □कस्वर्गीय हो चुकेकेंद्रीय मंत्री केबारे में बताया जाता है कि जो उन्हें 'महाराजा' नहीं कहते थे और उनकेसामने उनकी प्रजा होने का अहसास नहीं दलिाते थे, उनकी तरफ वे ठीकसे देखते भी नहीं थे। उज्जैन केबारे में माना जाता है कि वहां केराजा महाकाल (शवि) है और इसलि। सधियिावंश केराजा वहां रात को नहीं ठहरा करते थे, जनिकी ग्वालयिर रियासत का □कहस्सिा उज्जैन भी हुआ करता था, क्योंकि माना जाता है कि □कशहर में दो राजा □कसाथ रात नहीं बता सकते।

राजतंत्र किस तरह हमारी मानसकिता में बैठा हुआ है इसका □कउदाहरण यह भी है कि गुजरात में जनता को सहज ही प्रजा कहा जाता है और हम हदिीभाषी भी बनिा सोचे-समझे कई बार लोकतंत्र को प्रजातंत्र कह बैठते है। जब प्रजा है ही नहीं तो कैसा प्रजातंत्र? और प्रजा केहोते प्रजातंत्र हो भी कैसे सकता है, वहां तो राजतंत्र ही होगा।

मुंशी प्रेमचंद अपने लेखन और जीवन में अंगरेजों और सामंतवाद से ल□ते रहे, मगर वे आज भी वे 'उपन्यास सम्राट' की तरह याद कि। जाते है और इस शैली में न जाने कतिने लेखकन जाने किस-किस तरह केसम्राट बन चुकेहैं। खुशकिस्मती है कि साहत्यि से अब सम्राटों का दौर जा चुका है, मगर बाकी क्षेत्रों में सम्राट हैं। □कबस्कुिट सम्राट थे। ऐसे और भी कई सम्राट हैं। गुंडई केलि। कुख्यात कुछ भैयाओं केनाम केआगे और कुछ केपीछे राजा लगा हुआ है। राजा बेटा और रानी बटियिा तो प्राय: हर हदिू घर में होते हैं। राजकुमार नाम भी काफी प्रचलन में रहा है।

राष्ट्रपतजिी हमारे देश केप्रथम नागरकि माने जाते है, मगर राष्ट्रपतयिों केतामझाम किसी राजा को भी मात कर देने वाले होते हैं। राजनीतमिें प्रधानमंत्री से लेकर सांसद-वधिायक और सरपंच तक अपनी-अपनी दुनिया में राजा ही होते है। कई ब□ धर्माध्यक्ष किसी सनकी-सामंती-वलिासी-हसिकराजा की तरह ही व्यवहार करते है। ब□-ब□ धनपतयिों का व्यवहार भी किसी राजा से कम नहीं होता। क्लेक्टर को अब भी जलि का राजा माना जाता है, इसलि। हर आइ□□स का सपना कम से कम □कबार क्लेक्टर बनने का जरूर होता है। अपने-अपने दफ्तर में वहां केअफसर से लेकर चपरासी तकसभी राजा होते है, वहां सरकारी कानून से ऊपर उनका अपना कानून होता है और वही चलता भी है। और हम सब भी- जो खाते-पीते वर्गों से हैं- उस सामंती परंपरा केअंग हैं,

जिन्हें स्कूली-कॉलेजी पढ़ाई के बाद शारीरिक श्रम करना अपमानजनक लगता है। कई तो दफ्तर ही नहीं, घर में भी पानी तक खुद लेकर नहीं पीते। होटलों-रेस्तरांओं के बाहर जो चोबदार हमारे लिए दरवाजा खोले खड़े रहते हैं, वे लोकतंत्र की जड़ें गहरी होने का कितना सबूत देते हैं? जिनके पास ड्राइवर होते हैं, वे अक्सर अपनी कार का दरवाजा खुद खोलना अपमान समझते हैं। अपने घर में साफ-सफाई आदि के लिए आने वालों के साथ हमारा व्यवहार अक्सर क्या बताता है कि हम लोकतांत्रिक मानसिकता में ढले-बने हैं?

फेसबुक पेज को लाइक करने के लिए क्लिक करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्विटर पेज पर फॉलो करने के लिए क्लिक करें- https://twitter.com/Jansatta